

BRAHMASREE VISUDHANANDA SWAMI

Brahmasree Visudhananda Swami is President of Sree Narayana Dharma Sanghom Trust (SNDST), Sivagiri Mutt, Varkala, Kerala. Sage Sree Narayana Gurudev himself formed the Sanghom on January 9, 1928. The Sanghom was formed for the unity, prosperity and equality of all people as Gurudev believed in the philosophy of "Man is of One Caste and that is his Religion". Swamiji dedicated his entire life in following this Gurudarsana for the Socio-economic development and spiritual awareness of the poor and downtrodden sections of society, irrespective of caste, creed or religion.

2. Born in Kozhuvalloor, Chengannoor on October 5, 1950, right from childhood Swamiji got inspired by his devotee Father, towards spiritualism and the high principles of Gurudev. Although Swamiji was studying in Christian College, Chengannoor, his mind and thoughts were so overwhelmingly engrossed in spirituality, ideals and principles of Gurudev which compelled him to join Sivagiri Mutt in 1968 and detached himself from his family relationship. After joining Sivagiri Mutt Swamiji learnt Sanskrit and spiritual scriptures from Sreemath Brahmananda Swamiji. Swamiji then joined the Thanthra Vedantha Course conducted by the Travancore Devaswom Board and completed it.

3. In 1970, Swamiji joined the very first batch of Sivagiri Brahmavidhyalaya (The School of Unitive Sciences) under the leadership of Mattathipathy Brahmasree Sankarananda Swami and other ascetic disciples of the Guru and Sanskrit Scholars like Prof. M.H. Sasthrikal, E.V. Damodaran, Prof. K. Balarama Panicker etc. After completing the Brahmavidya Course, Swamiji travelled for several years, through various Pilgrim Centres of North India and engaged himself in deep meditation and contemplation there. Continuing his spiritual journey he came in contact with well known Vedantha Scholar Sreemath Vimalananda Swamiji at Mehammadabad near Ahammedabad, Gujarath. Later in 1979 Swamiji returned to Sivagiri Mutt and continued serving Sivagiri Mutt and its Branch Asrams. Later in the year 1984, he became the General Secretary of Dharma Sanghom Trust.

4. Thereafter, he moved his base of spiritual activities to Maruthwamala in Kanyakumari Dist. in 1991 where Sree Narayana Gurudev had engrossed himself in deep penance / Thapas for many years leading to his attainment of "Enlightenment". Thus, Maruthwamala became the divine "Thaposthal" of Gurudev. At Maruthwamala, Swamiji served for about 26 years and established Sree Narayana Guru Dharma Mutt. At present Maruthwamala Mutt is the most Devine Pilgrim Centre of millions of devotees of Gurudev and also a well known Study Centre of Guru Philosophy and teachings.

5. In 2016, Swamiji attained the Presidentship of Dharma Sanghom Trust, Sivagiri, Varkala. This position is being continued till now. As President, Swamiji has truly followed Gurudharma, worked relentlessly to preserve Traditional Indian Spiritualism and to protect and propagate the same and aiming for the integration of the world through Universal brotherhood. Swamiji is writing a Weekly column " Guruprakasam" in the Kerala Kaumudi, Malayalam National Daily. Swamiji is also Editor of "Sivagiri" Magazine. Swamiji undertakes extensive touring to deliver lectures based on Guru's compositions, messages and teachings at all major Cities of India and abroad. Following Gurudharma, Mutt has undertaken under the able leadership of Swamiji a series of actions in the field of Education, Agriculture, Health, Cleanliness and Piety etc. In recognition of the welfare activities of the Mutt, The Nirappel Trust and St. Antony's College, Kanjirappally awarded the XIIIth Nirappel Communal Harmony Award 2017 to Sivagiri Mutt under the leadership of Swamiji.

6. Swamiji says that modern world is facing many problems because man has distanced himself from humanity and Universal Brotherhood. "If man himself is not good what purpose will it be served by improving the world"said Gurudev. Therefore, Sivagiri Mutt is travelling through " One Caste, One Religion, One God for the Mankind" in the Universal Path shown by Gurudev- "whatever be the difference in religion, dress, habits or language of man, they are of the same caste, All human beings in the world belong to One Caste and that Caste is called humaneness".

पद्म श्री



ब्रह्मश्री विशुद्धानन्द स्वामि



ब्रह्मश्री विशुद्धानन्द स्वामि श्री नारायण धर्म संघम ट्रस्ट (एसएनडीएसटी), शिवगिरि मठ, वरकाला, केरल के मठाधीश हैं। संत श्री नारायण गुरुदेव ने स्वयं दिनांक 09 जनवरी, 1928 को अपने शुभ कर कमलों से संघम की स्थापना की। सभी लोगों की एकता, समृद्धि तथा समानता के लिए इस संघम की नींव रखी गई क्योंकि गुरुदेव "मानव की एक जाति तथा एक ही धर्म है" के दर्शन में विश्वास रखते थे। स्वामी जी ने जाति, पंथ अथवा धर्म की परवाह न करते हुए गरीबों तथा समाज के दलित वर्गों के सामाजिक, आर्थिक विकास एवं उनकी आध्यात्मिक चेतना के लिए इस गुरुदर्शन का अनुसरण करने में अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

2. आपका जन्म दिनांक 05 अक्तूबर, 1950 को कोझूबेल्लूर, चेंगान्नूर में हुआ। अपने बचपन से ही स्वामी जी अपने भक्त पिता से आध्यात्मवाद एवं गुरुदेव के उच्च कोटि के सिद्धांतों की ओर प्रेरित हुए। हालांकि स्वामी जी क्रिश्चियन कॉलेज, चेंगानूर में अध्ययनरत थे किंतु उनका दिल एवं दिमाग आध्यात्मिकता, गुरुदेव के आदर्शों एवं सिद्धांतों से इतना अधिक ओतप्रोत था कि वे वर्ष 1968 में शिवगिरि मठ जाने के लिए प्रेरित हुए और उन्होंने स्वयं को पारिवारिक बंधनों से मुक्त कर दिया। शिवगिरि मठ जाने के पश्चात् स्वामी जी ने श्रीमथ ब्रह्मानंद स्वामी जी से संस्कृत एवं आध्यात्मिक धर्मग्रंथों का अध्ययन करना सीखा। इसके उपरांत स्वामी जी ने त्रावणकोर देवस्वम बोर्ड द्वारा आयोजित तंत्र वेदांत पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया तथा इसे सफलतापूर्वक पूर्ण किया।

3. वर्ष 1970 में पूज्य स्वामी जी ने मठाधिपति ब्रह्मश्री संस्कारानंद स्वामी तथा गुरु के अन्य तपस्वी शिष्यों एवं प्रोफेसर एम.एच. शस्त्रिकाल, ई. वी. दामोदरन, प्रोफेसर के बालाराम पणिकर इत्यादि जैसे संस्कृत के प्रकाण्ड पंडितों के साथ शिवगिरि ब्रह्म विद्यालय (द स्कूल ऑफ यूनिटिव साइंसिज) के प्रथम बैच में प्रवेश लिया। ब्रह्मविद्या पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपरांत, पूज्य स्वामी जी ने उत्तर भारत के विभिन्न तीर्थस्थलों की कई वर्षों तक यात्रा की और वहां गहन ध्यान एवं चिंतन-मनन करते रहे। अपनी आध्यात्मिक यात्रा के दौरान, आप अहमदाबाद, गुजरात के समीप मेहमदाबाद में सुविख्यात वेदांत विद्वान श्रीमथ विमलानंद स्वामी जी के संपर्क में आए। बाद में वर्ष 1979 में स्वामी जी शिवगिरि मठ लौट आए और आपने शिवगिरि मठ तथा इसके शाखा आश्रमों में सेवाएं देने लगे। तदुपरांत वर्ष 1984 में आप धर्म संगम ट्रस्ट के महासचिव नियुक्त किए गए।

4. इसके पश्चात्, वर्ष 1991 में आपने अपनी आध्यात्मिक गतिविधियों का केन्द्र मरुथवामाला से बदलकर कन्याकुमारी कर दिया जहां श्री नारायण गुरुदेव कई वर्षों तक ध्यानमग्न/गहन तपस्या में लीन रहे और उन्हें "ज्ञान" की प्राप्ति हुई। इस प्रकार मारुथवामाला पूज्य गुरुदेव जी का दिव्य "तपोस्थल" बन गया। मारुथवामाला में स्वामी जी ने लगभग 26 वर्षों तक सेवा की और अपने कर-कमलों से श्री नारायण गुरुधर्म मठ की नींव रखी। इस समय मारुथवामाला मठ गुरुदेव के करोड़ों भक्तों के लिए सर्वाधिक श्रृद्धेय तीर्थस्थल तथा गुरुदेव के दर्शन एवं उनकी शिक्षाओं का प्रख्यात अध्ययन केन्द्र है।

5. वर्ष 2016 में, स्वामी जी ने धर्म संघम ट्रस्ट शिवगिरि, बरकाला का अध्यक्ष पद ग्रहण किया। अध्यक्ष के रूप में स्वामी जी ने सच्चे अर्थों में गुरुधर्म का अनुपालन किया है और परम्परागत भारतीय आध्यात्मवाद को संरक्षित रखते हुए उसकी सुरक्षा एवं उसके प्रचार के लिए अनवरत प्रयास किया है और आप सार्वभौमिक भातृभाव के माध्यम से वैश्विक एकीकरण के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कार्यरत हैं। स्वामी जी केरल कौमुदी नामक एक मलयालम राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र में साप्ताहिक कॉलम "गुरु प्रकाशम" को लेखनीबद्ध करते हैं। स्वामी जी "शिवगिरि" पत्रिका के संपादक भी हैं। आपने गुरु जी की रचनाओं, संदेशों तथा उनकी शिक्षाओं पर आधारित लेक्चर देने के लिए भारत तथा विदेश के लगभग सभी प्रमुख शहरों का दौरा किया है। गुरुधर्म का पालन करते हुए, स्वामी जी के कुशल नेतृत्व में मठ द्वारा शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, स्वच्छता, धर्मपरायणता इत्यादि के क्षेत्र में अनेक कार्य किए हैं। स्वामी जी के कुशल नेतृत्व में मठ की कल्याणकारी गतिविधियों की मान्यता स्वरूप द नीरप्पल ट्रस्ट तथा सेंट एंटनी कॉलेज, कांजिरापल्ली द्वारा शिवगिरि मठ को 13वें निरप्पल कम्युनल हॉर्मनी अवार्ड, 2017 से सम्मानित किया गया है।

6. स्वामि जी का ऐसा मानना है कि आधुनिक विश्व को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि मनुष्य ने स्वयं को मानवता तथा सार्वभौमिक भातृभाव से विलग कर लिया है। "गुरुदेव जी ने कहा था, "यदि मनुष्य स्वयं अच्छा नहीं है तो वह विश्व को सुधारकर क्या करेगा"। अत:, गुरुदेव द्वारा दिखाए गए सार्वभौमिक मार्ग में शिवगिरि मठ "मानवता के लिए एक जाति, एक धर्म एवं एक इष्टदेव" की भावना को लेकर आगे बढ़ रहा है जिसका यह मानना है कि- आदमियों के धर्म, वेशभूषा, आदतों अथवा भाषा में कितना भी अंतर क्यों न हो, किंतु वे एक ही जाति के हैं, सभी मनुष्य एक जाति से संबंध रखते हैं जिसका नाम है मानवता।